

१- जय-जय-जय गिरिवारी नन्दकी है, जय ज्योति बृहन्न की माता
शोभा मुख-चन्द-चकोरी, है जय जगति जानने हे वरदाता
नाहे लख पड़ता कछुत देवे तब, आदि मध्य अन्त के अवसाना
हो भव-र विभव पशुभव, करिण भक्ति भेद नहीं जाना
तुम शिव की परम पिदारी हो, सब के ऊर की जानने हारी हो
मम की इच्छा किस तरह कहुँ, कहौ मे है लज्जा भारी

को. जो देवता सुतिय मरु, गातु प्रथम तब देख
माहिमा आभिरु न कीह सकाहे सहस शारदा शेष

२- धनुष के साज
हे गणपीत आज सफल कर दो, सब दिन की सच्ची सेवा कर
हे महादेव होकर प्रबन्त हरिमे, चतुर्भुज की गरुडा
हे पार्वती हे दयावती दोनो की, माता तुम्हें तो हो
मे आज तुम्हीं पर निर्भर हूँ, मेरी वरदाता तुम्हीं हो हो
कामना के फूलों से गुँथी, यह मेरे तुम्हीं कर माता की
मे आज तुम्हीं पर लज्जा हूँ। जय माता की वर माता की
यह धनुष तुम्हारे पिया का है, तुम पिया की अपनी प्यारी हो
तुम के सगम तौड़े रघुवर, यह सच्ची पति तुम्हारी हो

३- वार्ता (कनकवन)
हे माताजी मे सुना है कि मेरे पाणनाथ वन जाने को
तैयार है जाता, हमें भी आता दीज

४- दीक्षा
पाणनाथ करुणानमन, सुन्दर सुखद सुजान
तुम तिन शङ्ख कुल कुमुद विन, शशिप आधर सभान
शशिप, अवध जो अवधि लगे, रहत जानिये पाण
दीन वन्दु सुन्दर सुखद शील सोनेह निधान

५- वार्ता
हे माताजी मे परम आभागी हूँ, सेवा करने के समय निधान
ने मुझे आप के चरणों से अलग कर दिया मेरी सारी
आभिलषायें अधूरी रह गयी।

६- राधा (मृग को देखने पर)
मृग तो ऐसा देखा न सुना, जो तब सुख सनेता है
देखो तो सर से पाँव तक सारा सोना ही होता है।

राखी है नाथ खाल लावो इसकी तो कुरिया भी दूंगा होगी
सोने की हथका हथका वगैर आदरुत याद गार होगी

(५) राखी है लखन खीच जाकर देखो, खुदाई तुम्हें ^{पुकार} निहार रहे
भाई के थके हुये बाजू, भाई की राह निहार रहे
मगवान न जाने वे प्रियतम कितने आँकड़ में रहे।
देवर इसी में सन्देह नहीं महाबाज इस समय दुःख में है

(६) राखी यदि भूला हवे समझते हो लो मरना मानो माला की
जाँझ में काँझा तुम्हें देती हूँ, जाँझो सुध लाओ आलमी

(७) वार्ता कच्छ कब में समझ गयी, तुम मेरे साथ क्यों आये हो

वार्ता पर लक्ष्मण तेरी यह आँखें लख में, हथका पूछ नहीं होगी
जिस दिन भी शम नहीं होंगे, उस दिन कील दी होगी

(८) गुनि जी आप जोर न किजिए मे वारही आँखें भिदा हूँगी

(९) यती जी आप महात्मा होकर कैसे दुखों के सवाल काटवा कर रहे

(१०) दीध हौं जगदीश देव खुदाया कहि अक्साध विसोर उदाया
आरति हरण धारण सुख दायक, हौं खुदुल खोज निज दायक
हौं लक्ष्मण तुम्हारे नहीं दोष, जो फल पायेहूँ तीनहुँ शेष
विपति मोर को प्रभुई सुनावा, पुरी राम जस राम को रवावा

[रावण से]

वार्ता १- केशी हठेली को प्रणाम करे क्यों आरु

॥ २- राम भाग्य सीत को सताया मुनासिब नहीं जली को जलाना
मुनासिब नहीं

॥ ३- इसका परिणाम यही कि वह खंय जलकर भस्म हो चली है

॥ ४- अब शारा राम आयेगा

॥ ५- मे क्या जाँऊँ कह ^{जो भी} प्रभु है मेरी समझ में नहीं

- 11 6- छोड़ दें मौहलत राग की तो जिन्दगी किस काम की ✓
- 11 7- तुझे मार कर मैं रा प्यारा बामले जायेगा
- 11 8- जो किसी को धोखा देकर वह आप धोखा खोयेगा कुँआ-
खो देते वाला खुद कुँआ में जायेगा
- 11 9- चल दे पापी बाट की, कसो करता वक्तवाट
चुनुक युग की बात को, धर ले दिल में ध्यान
मोद मेरी कृपा चाहता था तो वही चुनुक लोड़ा होला
वक्त था तो भरे स्वयंम्बर में, मुझसे नाहा जोड़ा होला
तुम मोड़ा नहीं चोर हो, इसलिये तुम्हें धिक्कारी हूँ।
तेरे सोने की लंका पर, नफरत की छेकर मारती हूँ।
- 11 10- हे अशोक के वृक्ष तुम मेरे शोक को दूर करो मैं तुम्हारा वृक्ष
अपका भानूँगी
- 11 11- हे मारा तुम मेरी विपत्ति की संगति हो आल तुम लकीर भाइवर
बबके आग लगा दो तारि में जलक मल्ल हो जाऊँ।
- 11 12- आरे यह किसी अँकुरी है ये हो मेरे रजिमी श्री शय की है इहे लो कोइ
जीत नहीं सकता। भाभा से इससे अँकुरी बना भी नहीं जा सकी
- 11 13- बेरा मनुष्य कोर कदर का साथ कैसे डका, हमे यह शंका है,
- 11 14- अच्छा यह बताओ कि हमारे प्राणपति अपने भाइ के साथ कुशल
धर्म से है।
- 11 15- परबेरा महीं के रखवाले राक्षस है जो फल को खाने जाते हैं वे तुम्हें
ही अहे मार गिराते हैं।
- 11 16- मोद बेरा तुम्हें हिम्मत हो तो मैं तुम्हें बना नहीं करूँगी।
- 11 18- लो यह चुड़ा माँ तुमको चिन्ह देती हूँ। हमारे प्राणपति से
कह देना कि मोद वे रुक गाह के अंदर नहीं आयेगा
तो हमें जिंदा नहीं पायेगा।

The end

वज्र
वज्र